चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भास्कर
दिनांक 18.7.2019 पृष्ठ सं. 2 कॉलम 1-6

नई शिक्षा • बोर्ड मीटिंग में एचएयू के कुलपति के किए प्रयासों के बाद अब शुरू हो रहा है कॉलेज

सलाइन वाटर में मछली कर सकती हैं ग्रोथ, इसलिए एचएयू ने प्रदेश का पहला फिशरीज कॉलेज हिसार में किया शुरू

प्रवेश परीक्षा से स्नातक, परास्नातक और पीएचडी में दाखिले लेना शुरू

वैभव शर्मा | हिसार

हरियाणा में अब तक किसानों को पारंपरिक खेती से जोड़कर देखा जाता रहा है, मगर अब खेती से जुड़े दूसरे सेक्टरों में भी सरकार जाने की तैयारी कर रही है ताकि किसानों की आय दोगुनी हो। इसके साथ ही प्रदेश में ऐसे कई स्थान हैं जहां सलाइन वाटर है, जिसमें वैज्ञानिक मानते हैं कि यह पानी मछली पालन के लिए सबसे अच्छा स्रोत है। ऐसी संभावनाओं को लेकर एचएयू ने प्रदेश का पहला कॉलेज ऑफ फिशरीज शुरू कर दिया है।

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि आधिकारिक रूप से कॉलेज में स्नातक, परास्नातक और पीएचडी में दाखिले लेने के लिए प्रोसेस शुरू कर दिया गया है। इस कॉलेज में बेचलर इन फिशरीज साइंस यानि बीएफएससी, मास्टर इन फिशरीज साइंस यानि एमएफएससी और फिशरीज के विषयों में ही पीएचडी कराई जाएगी। इस प्रोजेक्ट में जूलॉजी डिपार्टमेंट में वैज्ञानिक डॉ. धर्मवीर मलिक भी शामिल हैं।

ऐसे फिशरीज कॉलेज की हुई शुरुआत

दरअसल, 25 मई को चीफ सेक्रेटरी की अध्यक्षता में बोर्ड की 263वीं बैठक हुई थी। इसमें एचएयू के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि मछली पालन प्रदेश में युवाओं और किसानों के लिए एक बड़ा व्यवसाय बन सकता है। क्योंकि यहां सलाइन वाटर की अधिकता है, जिसे न तो खेती के लिए प्रयोग किया जा सकता है और न ही पीने के लिए। ऐसे में सलाइन वाटर में मछली अच्छे से ग्रोथ कर सकती हैं। इसीलिए हमने बोर्ड मीटिंग में प्रस्ताव दिया कि एचएयू हिसार कैंपस में फिशरीज कॉलेज शुरू करना चाहता है, जिसके लिए विवि में इंफ्रा भी है। अधिकारियों और वैज्ञानिकों की मंत्रणा के बाद इस पहल को बोर्ड ने स्वीकृति दे दी। अब फॉरेस्ट्री डिपार्टमेंट की बिल्डिंग में दो माले पर इस कॉलेज का संचालन किया जाएगा। इसके लिए कुछ फैकल्टी बाहर से तो कुछ एचएयू में पहले से ही मौजूद हैं।

फिशरीज कॉलेज से यह होगा लाभ

- भारत सरकार और प्रदेश सरकारों के फिशरीज डिपार्टमेंट में अभी तक मेडिकल से जुड़े लोग लिए जाते हैं, यहां से कोर्स करने के बाद फिशरीज के एक्सपर्ट छात्रों को वरीयता दी जाएगी।
- फिशरीज से जुड़े विषयों को लेकर नई संभावनाओं को बढ़ावा मिलेगा।
- किसान और यहां से पढ़ने वाले युवा यहां से प्रशिक्षित होकर मछली पालन का काम कर आय बढ़ा सकते हैं।
- दिल्ली का मार्केट हरियाणा से जुड़ा हुआ है, ऐसे में 4 करोड़ के इस मार्केट तक फिश प्रोडक्ट ताजा और जल्दी पहुंचाए सकते हैं।

फिशरीज कॉलेज में सात विभाग में तैयार होंगे एक्सपर्ट

- एक्वाकल्चर
- फिशरीज रिसोर्स मैनेजमेंट
- फिश प्रोसेसिंग टेक्नोलॉजी
- एक्वाटिक एन्वार्यनमेंट मैनेजमेंट
- फिश इंजीनियरिंग
- एक्वाटिक एनिमल हेल्थ मैनेजमेंट
- फिशरीज एक्सटेंशन, इकोनॉमिक्स एंड स्टेटिक्स

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... अमर उजाला .....
दिनांक 18.7.2019 पृष्ठ सं. ..... 4 ..... कॉलम ..... 1-6 .....

पेस्टीसाइड का बेहतर विकल्प है बायो फर्टिलाइजर

एचएयू में बेसिक साइंस कॉलेज में आयोजित सेमिनार में विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किए रिसर्च पेपर

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। पेस्टीसाइड्स के अंधाधुंध इस्तेमाल से बुरे कीटों के साथ-साथ अच्छे कीट भी खत्म हो रहे हैं। जो कीट इनके प्रभाव से भी नहीं मरते तो उनके शरीर में पेस्टीसाइड्स एकत्रित होना शुरू हो जाते हैं। जो अन्य कीट या जानवर उन कीटों को खाते हैं, यह पेस्टीसाइड उनके शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

इसके अलावा इनके इस्तेमाल से मानव की रोग प्रतिरोधी क्षमता भी कम हो रही है। बायो फर्टिलाइजर पेस्टीसाइड्स का बेहतर विकल्प है। किसान नीम ऑयल, वर्मीवॉश और लहसून ऑयल आदि का इस्तेमाल पेस्टीसाइड की जगह कर सकते हैं। यह कहना है हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी (एचएयू) के विद्यार्थी प्रवीण गिल का। प्रवीण ने बुधवार को यूनिवर्सिटी के बेसिक साइंस कॉलेज में आयोजित दो दिवसीय सेमिनार में अपना रिसर्च पेपर प्रस्तुत किया। बता दें कि यूनिवर्सिटी में जैव विविधता-इसकी समस्याएं, चुनौतियां और अवसर विषय पर दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया था। इस सेमिनार में विभिन्न राज्यों के वैज्ञानिकों व शोधकर्ताओं ने भाग लिया।

एचएयू में जैव विविधता पर आयोजित सेमिनार को संबोधित करते मुख्य वक्ता।

स्टोर किए गए अनाज को नुकसान पहुंचा रहे हैं सूक्ष्मजीवी

एचएयू के विद्यार्थी दीपक ने स्टोर किए गए अनाज में सूक्ष्मजीवी की समस्या पर अपना रिसर्च पेपर प्रस्तुत किया। दीपक के मुताबिक स्टोर किए गए अनाज में सूक्ष्मजीवी का होना एक बड़ी समस्या है। चूंकि ये सूक्ष्मजीव हमें आंखों से दिखाई नहीं देते है, तो हमें इनके बारे में पता भी नहीं चलता। ये अनाज को क्वालिटी व क्वांटिटी दोनों को कम करते हैं। ऐसा अनाज खाने में मानव शरीर पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। इस कारण से एलर्जी आदि बीमारियां हो सकती हैं। इन सूक्ष्मजीवियों का सिर्फ मॉलिक्यूलर मार्कर तकनीक से पता लगाया जा सकता है। इसके अलावा कुछ अनाज को स्टोर करने से पहले कुछ सावधानी बरतकर जैसे साफ-सफाई करना या नमी को दूर करना आदि के माध्यम से इस समस्या को दूर किया जा सकता है।

सेमिनार का हुआ समापन

सेमिनार के दूसरे व अंतिम दिन वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं ने अपने रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने सभी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को प्रेरणा स्वरूप जैव विविधता में विभिन्न पहलुओं को आंकलित किया और उन्हें अपने व्यवहारिक जीवन में लागू कर अर्थपूर्ण बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि इसे फलदायी बनाने के लिए सभी वैज्ञानिक और अनुसंधानकर्ताओं को एक दिशा में नियोजित ढंग से कार्य करने की जरूरत है। सेमिनार में डॉ. डीपी अवरोल, डॉ. एसके गर्ग, डॉ. बीएन पुटाटुंडा, डॉ. केके शर्मा, डॉ. एसके गहलावत, डॉ. कुमुद सिंह, डॉ. राजवीर सिंह, अधिष्ठाता मौलिक विज्ञान महाविद्यालय, डॉ. रचना गुलाटी आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ......हरि. भूमि......
दिनांक 18.7.2019 पृष्ठ सं. 12 कॉलम 7-8

चुनौतियां व अवसर पर सेमिनार का समापन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बेसिक सांइस कालेज के जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय सेमिनार का बुधवार को समापन हुआ। सेमिनार में अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत मुख्य अतिथि थे। सेमिनार का मुख्य विषय 'जैव-विविधताः इसकी समस्याएं, चुनौतियां और अवसर' रहा।

डॉ. सहरावत ने अपने वक्तव्य के माध्यम से सभी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को प्रेरणास्वरूप जैव विविधता में विभिन्न पहलुओं को आकंलित किया और उनको अपने व्यहवारिक जीवन में लागू करके अर्थपूर्ण बनाने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा कि इसे फलदायी बनाने के लिए सभी वैज्ञानिक और अनुसंधानकर्ताओं को एक दिशा में नियोजित ढंग से कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केपी सिंह के दिशा निर्देश में जैव विविधता को और बढ़ावा दिया जा सकता है।

इस दो दिवसीय सेमिनार में जम्मू कश्मीर, मेघालय, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, चंडीगढ़, पंजाब, राजस्थान, बिहार, त्रिपुरा, आदि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों व शोधकर्ताओं ने अपनी भागीदारी की। इस सेमिनार में डॉ. डीपी अवरोल, डॉ. एसके गर्ग, डॉ. बीएन पुटाटुंडा, डॉ. केके शर्मा, डॉ. एसके गहलावत, डॉ. कुमुद सिंह आदि ने तकनीकी सत्रों में अग्रणी व्याख्यानों की प्रस्तुति दी।